Yashoda Girls' Arts & Commerce College, Nagpur

Project in Environment Science

Session: 2021-2022

Name of the Project: Impact of Environment on Social Development

Number of Students Enrolled: 09

Name of Co-ordinator : Dr. Lalita Punnaya

Brief Report of Activity

Academic Year- 2021-2022

Name of Project	Project on Impact of Environment on Social Development
Academic Year of the project	2021-2022
Subject/ Course under which the project is taken	Environment Science
Number of students Completing the course	09 Students
Brief Report	The project on Impact of Environment on Social Development was given to the students of Environment Science as one of the compulsory course of RTM Nagpur University in which the project work is mandatory for the students to complete during the Session 2020-2021. Accordingly 09 students completed the project and submitted their project reports. They were awarded grades on their project work.
Project outcomes	• The students learnt a lot through the project regarding the impact of Environmental changes on social development. • They found out different aspects of the topic under study. • They completed the project under the guidance of the course co-ordinator. • They understood how the social development is affected by the increasing pollution and other factors damaging the environment.
Number of Beneficiaries:	Students: 09
Criterion No: I	Metric No: 1.3.2

Signature of Course Co-ordinator	Signature and Stamp of IQAC Co-ordinator	Signature & Stamp of Principal
	Co-ordinator, IQAC Yashoda Girls' Arts & Commerce College, Nagpur	Principal Yashoda Girls Arts & Commerce College,Sneh Nagar,Nagpur-15

List of Students completing the Project

Purushottam Khaparde Health & Education Society's

Yashoda Girls' Arts & Commerce College, Nagpur

Accredited B++ by NAAC

■ Recognized by Government of Maharashtra ■ Affiliated to RTM Nagpur University, Nagpur

SNEH NAGAR, WARDHA ROAD, NAGPUR - 440 015. (M.S.) INDIA

■ Tel. : 0712-2290637 ■ Fax No.: 0712- 2290368 ■ Website : www.yashodagirlscollege.edu.in ■ Email : ygc.ngp@rediffmail.com

YGC No./ Date

Project in Environment Science as per RTM Nagpur University Curriculum

Tile of the Pro: Project on Impact of Environment on Social Development

Number of students completing the project : 09

Session 2021-2022

Sr. No.	Name of the students enrollment in project
1	POOJA NARENDRA PRAJAPATI
2	ABOLI PRASHANT DHAMGAYE
3	ROSHNI SHAMRAO MASRAM
4	PRATIKSHA DINESH RAUT
5	DURGA HANUMAN DHAKATE
6	AISHARYS ANIL NEWARE
7	SAKSHI DEEPAK SHENDRE
8	MAYURI AJAY KATRE
9	SHIVANI DINESHPRASAD VISHWAKARMA

Signature of Project Co-ordinator

(Dr. Lalita Punnaya)

Signature of the Principal

Principal
Yashoda Girls Arts & Commerce College,Sneh Nagar,Nagpur-15

SEAL

Co-ordinator, IQAC
Yashoda Girls' Arts &
Commerce College, Nagpur

Project Copy

2021-2022

INDEX

Name : Pooja N. Prajapati

Std : B. Com Div : II^nd (sem) Roll No :

Sub : Environment (पर्यावरण) Project.

School / College : Yashoda Girls College.

Sr. No.	Date	Title	Remark	Pg. No.
		* सामाजिक घटक और विकास		
		- विकास पर परिणाम करना		
		सामाजिक घटक, कारण, परिणाम		
		* प्रोजेक्ट तयार करने के प्रकार		
		1) प्रस्तावना		
		2) प्रकल्प के महत्व और उद्देश		
		3) कार्यपद्दती		
		4) संकलित जानकारी स्वरूप		
		5) निष्कर्ष		
		6) आयोजना		

SEAL

PRINCIPAL
Yashoda Girls Arts & Commerce College
Sneh Nagar, Nagpur-15

|| भारतीय समाज का परिचय ||

M T W T F S
Date: 19/2/22 Page No.

(Introduction to Indian Society)

1) प्रस्तावना * → भारतीय समाज अत्यंत प्राचीन एवं संकिर्ण समाज रहा है। विभिन्न वंश के धर्म के भाषा के समूह एवं अन्य स्थलांतरित लोग भारतीय समाज मे आते रहे है, तथा यहाँ के वातावरण मे रच-बस गये यही नही, बल्कि अनेक कला एवं हस्त व्यवसायो का विकास भी हुआ था।

(क) भारतीय समाज का क्रमिक विकास *

① प्राचीन कालखंड
② मध्ययुगीन कालखंड
③ ब्रिटिश कालखंड
④ स्वातंत्र्य कालखंड

प्राचीन कालखंड के भारतीय समाज का विकास ज्ञात करने के लिए निम्न बिंदुओं पर विचार करेंगे।

(अ) सिंधु सभ्यता। (आ) आर्यो का आगमन तथा आर्यकिरण की प्रक्रिया (इ) जैन एवं बौद्ध धर्म का प्रभाव। (ई) हिन्दु समाज व्यवस्था॥

भारतीय समाज की रचना और उसके विभागो का अध्ययन "सामाजिक संस्था" यह अवधारणा समाज-शास्त्र मे केन्द्रस्थान पर है। "समाज-शास्त्र यानें सामाजिक संस्थाओ का अध्ययन करनेवाला विज्ञान है।" इसलिए किसी समाज का संपूर्ण एवं यथार्थ स्वरूप समझने के लिए उस समाज की सामाजिक संस्थाओ के स्वरूप का अध्ययन करना आवश्यक है।

SEAL

Date: 14/2/22

(क) भारतीय समाज का क्रमिक विकास :

① सद्गुणों का विकास
② वास्तुविद्या का विकास
③ साहित्य का विकास
④ वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास
⑤ आर्थिक विकास का प्रोत्साहन

भारतीय जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, और विशेषत : धार्मिक पहलुओ पर धर्मों की गहन एवं अमिट छाप पड़ी है।
भारतीय समाज की रचना और उनके विभागो का अध्ययन किया है, " सामाजिक संस्था " यह अवधारणा समाजशास्त्र मे केन्द्रस्थान पर है।
" समाजशास्त्र याने सामाजिक संस्थाओ का अध्ययन करनेवाला विज्ञान है। " इसलिए किसी समाज का संपूर्ण एवं यथार्थ स्वरूप समझने के लिए उस समाज की सामाजिक संस्थाओ के स्वरूप का अध्ययन करना आवश्यक है। यही तथ्य भारतीय समाज को भी लागू पड़ता है।

सामाजिक संस्था का अर्थ :

भारतीय समाज के विवाह, परिवार एवं जाती संस्थाओ का अध्ययन करने के पूर्व सामाजिक संस्था का अर्थ, व्याख्या एवं विशेषताओ का संक्षेप मे विचार करेंगे। मानव प्राणियो का तथा मानव समाज का अस्तित्व और निरंतरता बनाए रखने के लिए उनके विभिन्न आवश्यकताओ की पूर्ती होना आवश्यक होता है। तथापि, कोई भी समाज अपने सदस्यो को अनिर्बंध तरीको से अपनी आवश्यकताएं पूर्ण करने की स्वतंत्रता नही देता। विभिन्न आवश्यकताओ की पूर्ती किस प्रकार की जाए इस बारे में कुछ नियम एवं विधि समाज निर्धारित करता है,

इस नियमो एवंम निर्बंधो को ही सामाजिक नियमन (नियंत्रण) कहते है। जब यह नियमन किसी एक आवश्यकता के साथ आबद्ध किए जाते हैं, तब उसे हम सामाजिक संस्था कहते है। इस प्रकार व्यक्तियो के एवं समाज के आवश्यकता पूर्ति के मार्ग (तरीके) अथवा पद्धती निश्चित करनेवाले सामाजिक नियमनो के पुंज (set) को सामाजिक संस्था कहते हैं। विवाह, परिवार, राज्य, धर्म, अर्थ, शिक्षा आदि सामाजिक संस्थाएं है। सामाजिक संस्था का अर्थ अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए समाज-शास्त्रियो द्वारा बतई गई परिभाषाओ का विचार किया जा सकता है।

संस्था की परिभाषा *

(1) " सामाजिक संस्थाएँ सामान्य इच्छा द्वारा स्वीकृत और स्थापित मानवीय संबंधो की संगठित व्यवस्था है।"

(2) " सामाजिक संस्था सामाजिक विशेषताओ को स्पष्ट करनेवाले वह नियम है, जिनमे काफी स्थायित्व होता है। जिनका कार्य सामाजिक आवश्यकताओ को पूरा करना होता है।"

(3) " सामाजिक संस्थाएँ आचरण के वह नियम या प्रतिमान है जो मनुष्यो की प्रमुख आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए निर्मित हुए है।"

(4) " लोगो की आवश्यकताएं उचित-सुप्रस्थापित कार्य पद्धती द्वारा पूर्ण करने हेतू संगठित हुई मानव समाज की संरचना को ही संस्था कहते है।"

(5) " समाज की एकाधिक मूलभूत आवश्यकताओ की आपूर्ती करने के लिए सामाजिक आंतरक्रियाओ को मार्गदर्शित करनेवाला - नियमो - प्रतिमानो का संच (set) ही सामाजिक संस्था कहलाता है।"

सामाजिक संस्था की विशेषताएँ *

① सार्वभौमिक / सार्वत्रिकता
② सामाजिक नियमो का पुंज
③ स्वतंत्र कार्यप्रणाली
④ भौतिक साधन
⑤ चिन्ह या प्रतिक
⑥ आचारसंहिता
⑦ पारस्पारिक संबंध एवंम निर्भरता
⑧ सापेक्षतः स्थिर या स्थायी

भारत मे सामाजिक संस्थाएँ *

सामाजिक संस्था का अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताओ का अध्ययन करने के बाद हमे भारत की विवाह, परिवार एवं जाति इन सामाजिक संस्थाओ के बदलते स्वरुप का अध्ययन करना है। तत्वपूर्व हमे विवाह का अर्थ, परिभाषा एवंम विशेषताओ का संक्षेप मे विवेचन करना है।

विवाह संस्था → विवाह का अर्थ एवं परिभाषा :-
विवाह एक सार्वत्रिक स्वभाव की सामाजिक संस्था है। सभी समाजो मे पाई जाती है। लैंगिक तृप्ति मानव की जैविक आवश्यकता है। प्रत्येक समाज अपने सदस्यो के लैंगिक व्यवहार (आचरण) पर कुछ प्रतिबंध लगाता है। लैंगिक संबंध हेतू सहयोगी का चयन करने की संपूर्ण स्वंतत्रता सदस्यो को प्रदान नही की जाती है। प्रत्येक समाज अपने सदस्यो के लैंगिक संबंधो का नियंत्रण एवंम नियमन करने के लिए कुछ सामाजिक नियम निश्चित करता है। इन सामाजिक नियमो के समुच्चय (ढेर) को विवाह कहते है। तथापि केवल लैंगिक तृप्ति अथवा लैंगिक समाधान प्राप्त करना यह विवाह का एकमात्र उद्देश्य या लक्ष्य नही है। संतानोत्पति एवंम बालको का पालन-पोषन

SEAL

परिवार की स्थापना, प्रेम संपादन, स्त्री-पुरुष के मध्य सामाजिक एवंम आर्थिक सहयोग आदि भी विवाह के उद्देश्य है। विवाह का अर्थ जानने के लिए समाजशास्त्रीयो द्वारा दी गई कुछ परिभाषाओ पर विचार किया जा सकता है।

विवाह की परिभाषाएँ

क) "विवाह समाज की सम्मति प्राप्त लैंगिक सहयोगियो के मध्य सापेक्षतया स्थायी स्वरूप का बंधन है।"

ख) "विवाह एक या अधिक पुरुषो का एक या अधिक स्त्रियो के साथ होनेवाला यौन संबंध है, जिसे प्रथा से या कानूनन स्वीकृती होती है, तथा जिसमे दोनो पक्षो के प्रति तथा उसमे जन्म लेने-वाले संतान के प्रति निश्चित अधिकारो तथा कर्तव्यो का समावेश होता है।"

ग) "विवाह स्त्री और पुरुष दोनो को पारिवारिक जीवन मे प्रवेश करानेवाली संस्था है।"

घ) "विवाह एक प्रजननमूलक परिवार की स्थापना का समाज स्वीकृत तरीका है।"

च) "विवाह यह प्रजोत्पादन एवंम संतान के पालन-पोषन के लिए कियेजानेवाला समझौता है।"

SEAL

SHREE

विवाह की विशेषताऐं :

१) सामाजिक संस्था → विवाह समाज की सम्मति प्राप्त एक सामाजिक संस्था है। क्योंकि विवाह भिन्नलिंगीय व्यक्तियो के मध्य अर्थात पति-पत्नी के मध्य लैंगिक तथा आर्थिक सामाजिक संबधो को निर्धारित करनेवाले सामाजिक नियमनो का समूच्चय है।

2) संघात्मक स्वरूप → परंपरागत दृष्टिकोण से विवाह दो या अधिक भिन्नलिंगीय व्यक्तियो का संघ है। संघ मे कर्तव्य, अनुशासन होता है।

३) सामाजिक स्वीकृती → विवाह को समाज की मान्यता या स्वीकृती की आवश्यकता होती है। समाज की मान्यता न हो तो उसे विवाह नही माना जाता था। समाज की स्वीकृती प्राप्त होने के पश्चात ही भिन्नलिंगीय व्यक्तियो का संघ वैवाहिक बंधन बनता है। धार्मिक विधि अथवा सामाजिक कानून द्वारा विवाह को सामाजिक स्वीकृती प्रदान की जाती है।

४) स्थायी संबंध → सामान्यत: विश्व के सभी समाजो मे विवाह को पति-पत्नि के बीच एक स्थायी बंधन माना जाता है। पारंपारिक हिन्दु विवाह के अनुसार विवाह एक संस्कार माना जाता है और इसके कारण वह एक अटूट एवं पवित्र बंधन होता है।

५) नियम एवंम कानून → जैसे विवाह मे पति-पत्नी के एक दुसरे के प्रति अधिकार, कर्तव्य एवं विशेषाधिकार आदी का समावेश होता है।

जातिसंस्था (Caste Institution)

भारतीय समाज की संरचना मे विवाह और परिवार संस्था की तरह जाती संस्था भी एक महत्वपूर्ण संस्था है। भारतीय समाज के सभी अंगो एवंम व्यवहारो पर जाती प्रथा का गहरा प्रभाव पाया जाता है। इसके कारण भारतीय समाज का अध्ययन करते समय जाती संस्था का अध्ययन करना आवश्यक है।

भारत मे प्राचीन काल मे हिंदु समाज का ब्राम्हण, क्षत्रीय, वैश्य, शूद्र इन चार वर्णो मे विभाजन हुआ था। प्रत्येक वर्ण का व्यवसाय, सामाजिक स्तर (दर्जा) और जीवनशैली आदि बाते कतिपय नियमो के द्वारा निर्धारित की गई है। और इसी के परिणामस्वरुप भारत मे वर्णव्यवस्था का उदय हुआ। प्रारंभिक समय मे व्यक्ति का वर्ण उसके गुणकर्मो के अनुसार निर्धारित होता था। लेकिन आगे चलकर व्यक्ति का वर्ण उसके जन्म से निर्धारित होने लगा। अर्थात व्यक्ति का वर्ण उसके अभिभावक (माता-पिता) के वर्ण से निश्चित होने लगा और व्यक्ति को वर्ण मे परिवर्तन करने से प्रतिबंधित किया गया इसके पश्चात जनसंख्या वृद्धी के साथ लोगो की तथा समाज की आवश्यकताओ मे भी वृद्धी हुई। परिणाम: अनेक नए व्यवसाय कार्यो का उदय हुआ। इस कारक के कारण प्रत्येक वर्णातर्गत अनेक समूहो एवंम उपसमूहो का निर्माण हुआ। इन्ही समूहो एवं उपसमूहो को ही जाती-उपजाती के नाम प्रदान किए गये। इस प्रकार वर्णव्यवस्था से विभिन्न जातियो और उपजातियो का उदय हुआ।

विभिन्न जातियो के मध्य एवंम उपजातियो के मध्य पारस्पारिक संबंध तथा प्रत्येक जाती की जीवनशैली नियमित निश्चित करने के लिए अनेक सामाजिक नियमन (प्रतिमान) बनाए गये। इसप्रकार जातिसंस्था का उदय हुआ। वर्तमान समय मे भी इस जाती संस्था या जातिप्रथा का भारतीय समाज पर अत्याधिक प्रभाव पड़ा है, और आज भी अधिकांशत: बना हुआ है

SEAL

M T W T F S

Date: 15/2/22 Page No.

जाती व अर्थ :

जाती इस हिंदी शब्द के लिये अंग्रेजी भाषा मे "caste" इस संज्ञा (शब्द) का प्रयोग किया जाता है।
"कास्ट" यह संज्ञा स्पैनिश शब्द "Casta" अर्थात "वंश" (ब्रीड अथवा रेस) से बनी है। हिन्दु समाज के विभाजन को संबोधित करने हेतु पुर्तगालियो ने "कास्ट" संज्ञा का प्रयोग किया। तथापि "कास्ट" अर्थात "जाती" यह संज्ञा वंशशुद्धता के कल्पना पर आधारित नही है। अनेक विद्वानो ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है, कि "जाती" यह वंश शुद्धता का पैमाना या निदर्शक नही है। "जाती" यह अत्यंत संकिर्ण संस्था है। तथा उसके अनेक पहलू है। केवल "जाती" संज्ञा का प्रयोग करके हमे इन सभी विभिन्न पहलूओ का आकलन नही हो सकता हमे इसका अर्थ जानने के लिए इसकी परिभाषा को भी देखना चाहिए।

जाती की परिभाषा :

1) "जब कोई वर्ग मूलतः अनुवंशिका पर आधारित होता है, तब उसे हम जाती कह सकते है।"

2) "जाति यह एक अंतर्विवाह समूह है, अथवा अंतर्विवाही समूहो का संकलन है, जिसे एक सामान्य नाम होता है। जिसकी सदस्यता अनुवंशिक होती है, जो अपने सदस्यो के सामाजिक संपर्क पर कुछ बंधन डालता है, एक सामान्य परंपरागत व्यवसाय को अपनाता है।"

3) जाती एक सामाजिक समूह है, तथा उसकी कुछ विशेषतायें है।
(अ) विशेष जाती के सदस्य के कोख से जन्म लिये व्यक्तियो को ही उस जाती की सदस्यता प्राप्त होती है।
(ब) अपने सदस्यो को अपने जाति के बाहर के व्यक्ति से विवाह न करने का कड़ा बंधन होता है।

SEAL

SHREE

जाति की विशेषतायें :

जाति के संबंध मे उपरोक्त कोई भी परिभाषा परिपूर्ण एवं संतोषजनक नही है। और जाती का स्वरुप उसमे व्यक्त नही होता क्योकी जाती की प्रत्येक परिभाषा मे कुछ न कुछ दोष है। प्रत्येक परिभाषा अपने-आप मे अधूरी तथा ऊपरी-ऊपरी लगती है। सभी परिभाषाओ मे कुछ तत्व समान है, और वह है, जाति की सदस्यता जन्म पर निर्भर करती है, जाति अपरिवर्तनीय है। डॉ॰ आंबेडकर तथा डॉ॰ केतरकर की परिभाषा मे कहा गया है, कि जाति यह एक अंतर्विवाही समूह है। जाति की अन्य विशेषताओ का उल्लेख उपरोक्त परिभाषाओ मे नही है। जैसे कि पवित्र-अपवित्रता की भावना खान-पान या भोजन संबंधी निषेध-नियम, सामाजिक प्रास्थिती आदी। जाती सदस्य अपने एक ही पूर्वज का स्वीकार नही करते।

१) जन्माधारित समूह
२) पदानुक्रम / श्रेनीरचना
३) विशेषाधिकार एवं अयोग्यतायें
४) खान-पान एवं सामाजिक संपर्क पर निर्बंध
५) व्यवसाय के चयन पर प्रतिबंध
६) विवाह पर प्रतिबंध
७) धर्माधारित

॥ भारत की प्रमुख सामाजिक समस्याएँ ॥

M T W T F S

Date: 15/2/22 Page No.

भारत मे जनसंख्या वृद्धी की समस्या, स्त्रीयो की समस्याएँ तथा किसान आत्महत्या की समस्या इन प्रमुख सामाजिक समस्याओ का अध्ययन करना है। इसके लिए प्रथम सामाजिक समस्या की परिभाषा अर्थ एव विशेषताओ को संक्षेप मे समझना आवश्यक है।

सामाजिक समस्या का अर्थ एवं परिभाषा

(1) सामाजिक समस्या : कारण, जनसंख्या वृद्धी के परिणाम तथा प्रतिबंधात्मक उपाय
(2) स्त्रियो की समस्या : —
क) स्त्री - पुरुष असमानता
ब) नोकरीपेशा स्त्रियो की समस्याएँ
स) दहेज की समस्या
द) पारिवारिक या घरेलू हिंसाचार
3) किसान आत्महत्या : कारण और प्रतिबंधात्मक उपाय ॥

अर्थ → "समस्या से तात्पर्य ऐसे प्रश्न अथवा कठिनाई या बाधा से है, जिसे हल करने के लिए कुछेक उपाय - योजना करना आवश्यक होता है।"

इस प्रकार "समस्या" इस संज्ञा का अर्थ बताया जा सकता है। अन्य शब्दो मे, "सामाजिक समस्या" का आशय ऐसे सामाजिक प्रश्न या कठिनाई या बाधा से है, जिस पर कुछ उपाय करना आवश्यक है।

परिभाषा → १) "सामाजिक समस्याओ मे उन क्रियाओ का अथवा आचरण का समावेश होता है, जिन्हे समाज के अधिकांश लोगो समाजविघातक या सामाजिक मूल्यो का उल्लंघन मानते है, तथा जिनमे सुधार करना संभव है और आवश्यक है, मानते है।"

SEAL

SHREE

2) " सामाजिक समस्या का तात्पर्य ऐसी परिस्थिती से है, जो अधिकांश लोगो को अवांछनीय ढंग से प्रभावित करती है, और जिसके बारे मे सामूहिक कार्यवाही द्वारा कुछेक किया जा सकता है।"

3) " किसी समाज के अधिकांश सदस्यो को जब कोई व्यवहार, आचरण या स्थिती अवांछनीय या आपत्तिजनक लगती है, तब उसे सामाजिक समस्या कहा जाता है। इस समस्या से संघर्ष करने हेतू अथवा उसकी तीव्रता को कम करने हेतू सुधारात्मक नीतियाँ, कार्यक्रम या सेवा आदि की आवश्यकता है, इसकी अनुभूती उन सदस्यो को होती है।"

" सामाजिक समस्या से तात्पर्य, समाज की ऐसी स्थिती अथवा आचरण प्रकार से है, कि जो समाज के अधिकांश सदस्यो को उनके नियमनो (प्रमाणको) एवंम मूल्यो से असंगत, अनिष्ट, एवंम आपत्तिजनक लगता है, और उसमे सुधार करने हेतू सामूहिक कार्यवाही की आवश्यकता प्रतीत होती है।

सामाजिक समस्या की विशेषताएँ

क) सार्वभौमिक / सर्वव्यापकता → सामाजिक समस्याओ का स्वरूप सार्वभौमिक या सर्वव्यापकता होता है। अर्थात प्राचीन- वर्तमानकालीन परंपरागत - आधुनिक, प्रगत - अप्रगत, छोटे - बडे आदि सभी प्रकार के समाजो मे सामाजिक समस्या पाई जाती है। विश्व मे शायद ही ऐसा कोई समाज नही होगा, जहाँ एक भी समस्या नही है।

ख) व्यक्तिगत समस्या से भिन्न → जो समस्या किसी व्यक्ति या परिवार तक ही सीमित होती है, वह व्यक्तिगत या परिवारिक समस्या होती है। इसके विपरीत जिस समस्या के समाज के असंख्य लोग प्रभावित होते है, वह सामाजिक समस्या मानी जाती है। अत: सामाजिक समस्या व्यक्तिगत समस्या से भिन्न होती है। उदा: परिवार मे कोई एक व्यक्ति बेरोजगार होगा तो वह बेरोजगारी उस व्यक्ति या उसके परिवार की समस्या होगी।

ग) सापेक्षता → सामाजिक समस्याएँ स्थान, समय एवं व्यक्ति सापेक्ष होती है। अर्थात एक स्थान पर (समाज) मे एवं एक समय मे (कालावधि) जो दशा या स्थिती सामाजिक समस्या मानी जाती है। वह दूसरे स्थान पर एवं समय मे सामाजिक समस्या होगी यह आवश्यक नही है।

उदा ❋ भारत एवं चीन मे जनसंख्या वृद्धी सामाजिक समस्या मानी जाती है, लेकिन कुछ यूरोपीय राष्ट्रों मे इसे सामाजिक समस्या नही मानी जाती।

उसी तरह प्राचीन एवं मध्यकालीन भारतीय समाज मे सती प्रथा, बालविवाह, विधवाविवाह आदि सामाजिक समस्या नही मानी जाती थी। लेकिन ब्रिटीश शासनकाल मे इसे सामाजिक समस्या माना गया। सामाजिक समस्याएँ व्यक्तिसापेक्ष भी होती है।

घ) असंगतता → सामाजिक समस्या समाज मे प्रचलित सामाजिक प्रमाणक एवं मूल्य के प्रति असंगत (परस्परविरोधी) होती है, अथवा उनका उल्लंघन हो रहा है, माना जाता है। लोग कौनसा आचरण कर सकते है, और कौनसा नही कर सकते यह बतानेवाले नियमो को प्रमाणक कहते है। तो दूसरी और कौनसा आचरण उचित है और कौनसा अनुचित यह निर्धारित करने-वाले मानको को अथवा कसौटियो को मूल्य कहते है। जब सामाजिक प्रमाणक एवं मूल्यो से असंगत आचरण की प्रवृत्ति मे अत्याधिक वृद्धी होती है, तब यह स्थिती सामाजिक समस्या बन जाती है। वृद्ध माता-पिता की देखभाल करना एक सामाजिक नियम या मूल्य है। यदि इस के उल्लंघन मे वृद्धी हुई तब "वृद्धो की समस्या" सामाजिक समस्या बन जाती है।

घूँस लेना-देना मना है, लेकिन इस सामाजिक नियम के उल्लंघन की सीमा के बाहर वृद्धी होने पर "भ्रष्टाचार" एक सामाजिक समस्या हो सकती है।

SEAL

M T W T F S

Date: 16 / 2 / 22 Page No.

जनसंख्या की समस्या ★

जनसंख्या की समस्या उन्य सभी समस्याओ की जननी मानी जाती है, क्योंकि इस समस्या के कारण ही अन्य समस्याओ का उद्भव हुआ है। इसलिए जनसंख्या वृद्धी की समस्या को मूलभूत समस्या माना जाता है।

जनसंख्या वृध्दि समस्या का स्वरूप ★

यहाँ पर हम भारत की जन्मसंख्या वृद्धी की समस्या को वैज्ञानिक दृष्टिकोन से जानने का प्रयास करेगे। इसके पहले वैश्विक जनसंख्या वृध्दि के विषय मे विचार करना आवश्यक है। आज विश्व को अनेक समस्याओ का सामना करना पड़ रहा है, उनमे से एक जनसंख्या की समस्या भी है।

जनसंख्या की समस्या दो तरह की है →

1) न्यूनतम जनसंख्या की समस्या
2) अतिरिक्त जनसंख्या की समस्या

जब किसी देश की जनसंख्या वहाँ के प्राकृतिक संसाधनो से कम होती है, तब उस देश के सामने न्यूनतम जनसंख्या की समस्या होती है। उत्पादन बड़ी मात्रा मे परंन्तु उपभोग कम मात्रा मे, वस्तुओ की आपूर्ति अधिक परंन्तु मांग कम, मजदूरो - श्रमिको - कारीगरो की मांग ज्यादा परंन्तु आपूर्ती कम हो, तब वहाँ न्यूनतम जनसंख्या की समस्या है, ऐसा माना जाता है।

जब किसी देश की जनसंख्या वहाँ के भौगोलिक - प्राकृतिक संसाधनो की तुलना मे कई अधिक होती है, तब वहाँ के जनता को अनेक जीवनावश्यक वस्तुओ के लिए संघर्ष करना पड़ता है, कई अन्य प्राथमिक समस्याओ से जूझना पड़ता है, जैसे की रोटी, कपड़ा और मकान वहाँ अतिरिक्त जनसंख्या की समस्या कहते है।

SHREE

Date: 16 / 2 / 22

भारत मे जनसंख्या वृध्दि *

विश्व की जनसंख्या की तरह भारत की जनसंख्या भी बढ रही है। आज भारत की बढी हुई जनसंख्या भारत के लिए ही एक भयावह समस्या बन गई है। भौतिक विकास एवं उचित नियोजन के अभाव मे यह समस्या और भी भयावह बन गई है।

जनसंख्या वृध्दि की तुलना मे भारत दूसरे स्थान पर है। प्रथम स्थान पर चीन है। जनसंख्या की इस भयावह वृध्दि को "जनसंख्या का विस्फोट" कहा गया है यह वृध्दि भारत के लिए खतरे के साथ एक बहुत बड़ी चुनौती भी है।

भारत मे जनसंख्या वृध्दि के कारण *

भारत मे जन्मदर यह सापेक्षतया उच्च (अधिक) रहने के कारण तथा मृत्युदर कम होने के कारण यहाँ पर जनसंख्या मे तीव्र गति से वृध्दि हुई है। इसलिए हमे जन्मदर ज्यादा और मृत्युदर घटने के लिए उत्तरदायी कारको को जान लेना समस्या के सही आकलन के लिए आवश्यक है।

भारत मे उच्च जन्मदर के कारण / कारक

१) वैवाहिक कारक
२) शैक्षिक कारक
३) आर्थिक कारक
४) धार्मिक कारक
५) भौगोलिक कारक
६) मनोरंजनात्मक कारक
७) संयुक्त परिवार प्रणाली
८) परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता का अभाव

SHREE

मृत्यु प्रमाण घटने के कारण *

1) चिकित्सीय एवंम स्वास्थ्य सुविधाओ मे वृध्दि
2) प्राकृतिक आपदाओ पर नियंत्रण
3) शिक्षा प्रसार
4) जीवन-स्तर मे सुधार

जनसंख्याँ वृध्दि के परिणाम (प्रभाव) *

जनसंख्याँ वृध्दि के भारतीय समाज पर अनेक दुष्परिणाम हुए हैं। उनमे से कुछ दुष्परिणाम निम्नलिखीत हैं।

1) भूमी पर अतिरिक्त भार (दबाव)
2) कृषी भूमी पर भार (दबाव)
3) बेरोजगारी
4) निर्धनता
5) खाद्यान्नो का अभाव (समस्या)
6) अनुत्पादन उपभोक्ताओ मे वृध्दि
7) आर्थिक विकास मे बाधा
8) मुद्रास्फीति
9) पर्यावरणीय ह्रास
10) स्थलांतरण

जनसंख्या वृध्दि के नियंत्रण के लिए किए गये उपाय *

वास्तविक देखा जाए तो भारत मे जनसंख्या का विस्फोट हुआ है, और यदि इस पर नियंत्रण नही पाया गया तो आनेवाले वर्षो मे सामाजिक आर्थिक दशा अत्यंत गंभीर बन सकती है। इसके देखते हुए सरकार ने विभिन्न उपाए किए हैं, जिसका विवरण निम्नानुसार है।

SHREE

अ) स्वीकृत उपाय :- भारत की जनसंख्या मे वृध्दि हो रही है लेकिन स्वतंत्रतापूर्वक काल मे ब्रिटिशो ने जनसंख्या वृध्दि की समस्या की पूर्णत: अनदेखी की। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ती के पश्चात भारत सरकार का ध्यान इस और गया और लगा कि जनसंख्या वृध्दि को नियंत्रित किए बिना देश की प्रगती नही हो सकती।

अत: सरकार ने जनसंख्या नियंत्रित करने के लिए अग्रलिखित उपाय किए है।

1) परिवार नियोजन कार्यक्रम :-

1) परिवार मे बच्चो की संख्या निश्चित करना।
2) अनचाही संतान का जन्म टालना।
3) मनचाही संतान को जन्म देना।
4) दो संतान (बच्चो) के मध्य अंतर पर नियंत्रण रखना।

सरकार ने परिवार नियोजन के दृष्टि से आवश्यक सभी चिकित्सा सुविधाओ संपूर्ण भारत मे उपलब्ध करने के लिए परिवार नियोजन केंद्र स्थापित किए है। सन 1966 मे परिवार नियोजन कार्यक्रम को "परिवार कल्याण कार्यक्रम" नाम दिया गया। इस परिवार कल्याण कार्यक्रम के अंतर्गत परिवार का जीवनस्तर ऊँचा उठाने के लिए चिकित्सीय एवंम स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओ की आपूर्ति की जाती है। पंचवर्षीय योजनाओ के माध्यम से केन्द्र सरकार द्वारा परिवार नियोजन कार्यक्रम के क्रियान्वयन पर अधिकाधिक राशि व्यय की जा रही है।

ब) कानूनी प्रावधान :- जनसंख्या वृध्दि को नियंत्रित करने सरकार ने कुछ कानूनी प्रावधान किए है, उनका वर्णन इस प्रकार है
1) विवाह आयु - सीमा मे वृध्दि
2) गर्भपात को कानूनन स्वीकृती
3) अयोग्यताओ का निर्धारण
4) प्रोत्साहक / अभिप्रेरक

SEAL

जनसंख्या नियंत्रण के लिए सूझाए जानेवाले उपाय

१) स्त्री- शिक्षा का प्रसार
२) स्त्रियो की प्रस्थिती (दर्जा) ऊँचा उठाना
३) बालको / युवाओ की शिक्षा पर बल
४) सामाजिक सुरक्षा
५) मनोरंजन सुविधा
६) बाल मृत्यूदर कम करना
७) तीव्र आर्थिक विकास
८) तीव्र नगरीकरण
९) विलंब से विवाह करना
१०) जनजागृती कार्यक्रम
११) लाभो से वंचित रखना

स्त्रियो की समस्याँ

भारत की मुख्य सामाजिक समस्याओ मे स्त्रियो की समस्याऐ भी महत्त्वपूर्ण है। स्त्रियो की मुख्य समस्याएँ निम्नानुसार है।

अ) स्त्री- पुरुष असमानता
ब) नोकरीपेशा स्त्रियो की समस्याएँ
स) दहेज की समस्या
क) परिवारिक हिंसाचार की समस्या

SEAL

॥ राष्ट्रीय एकात्मता ॥

M T W T F S

Date: 17/2/22 Page No.

राष्ट्र के समक्ष जो अनेक सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनैतिक समस्याएँ हैं, उन समस्याओं का निराकरण करना आवश्यक है। हम राष्ट्रीय एकात्मता की प्रक्रिया को समझने के लिए राष्ट्रीय एकात्मता का अर्थ, उसकी आवश्यकता तथा राष्ट्रीय एकात्मता के मार्ग में आनेवाली बाधाएँ और राष्ट्रीय एकात्मता को बढ़ाने हेतू किए जा सकनेवाले उपाय आदि आदि का अध्ययन करेंगे।

राष्ट्रीय एकात्मता का अर्थ एवं आवश्यकता

" राष्ट्रीय एकात्मता को राष्ट्र की आत्मा माना जाता है। "

राष्ट्रीय एकात्मता की प्रक्रिया अपने देश का अस्तित्व, विकास और और स्थिरता बनाए रखने के लिए आवश्यक है। राष्ट्रीय एकात्मता की प्रक्रिया काफी जटिल है। राष्ट्रीय एकात्मता की संज्ञा में दो शब्द सम्मिलित है। पहला शब्द है, " राष्ट्र " और दूसरा शब्द है, " एकात्मता "।

व्यवहार में देश, राज्य और राष्ट्र यह शब्द समान अर्थ में प्रयोग किए जाते है परन्तु वैज्ञानिक दृष्टिकोन से इन शब्दो का अर्थ भिन्न-भिन्न है। " देश " यह शब्द विशेष भौगोलिक क्षेत्र के लिए प्रयोग किया जाता है। " राज्य " शब्द का अर्थ देश की राजनैतिक व्यवस्था से होता है। " राष्ट्र " शब्द का प्रयोग सर्वसमावेशक एकता की भावना रखनेवाले समूह के लिए किया जाता है।

राष्ट्रीय एकात्मता यह एक प्रक्रिया है। देश के सभी नागरिको ने क्षेत्र (प्रदेश) धर्म, वंश, जाती, भाषा, और संस्कृति के विषय की भिन्नता को भुलाकर हम सब एक है, कि भावना रखना ही राष्ट्रीय एकात्मता कहलाती है। सभी प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक भिन्नता का त्याग कर लोगो को एक सूत्र में बाँधने, पिरोने की प्रक्रिया को ही राष्ट्रीय एकात्मता कहते है।

SEAL

SHREE

राष्ट्रीय एकात्मता की परिभाषाएँ

राष्ट्रीय एकात्मता यह अमूर्त अवधारणा है, सांस्कृतिक, सामाजिक आर्थिक, और राजनैतिक एकता की भावना को बढ़ाती है।

(अ) राष्ट्रीय एकात्मता यह सामाजिक - मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।

(ब) " हम सब एक है " की भावना ही राष्ट्रीय एकात्मता है।

(क) लोगो के मन मे समान नागरिकत्व की भावना, समग्र तथा राष्ट्र के प्रति निष्ठा की भावना ही राष्ट्रीय एकात्मता है।

राष्ट्रीय एकात्मता की आवश्कता

राष्ट्रीय एकात्मता की आवश्यकता क्यों है, यह जानने या समझने के लिए देश की ऐतिहासिक, भौगोलिक, क्षेत्रीय (प्रादेशिक) सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमी का अवलोकन और सिंहावलोकन करना आवश्यक है।

राष्ट्रीय एकात्मता के कारण

1) देश की स्वतंत्रता एवं सम्प्रभुता बनाए रखना।
2) सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखना।
3) संघराज्य शासन पद्धति की रक्षा करना।
4) आर्थिक विकास को आगे बढ़ाना।

विविधता मे एकता

1) भौगोलिक विविधता
2) वांशिक विविधता
3) धार्मिक विविधता
4) जागतिक विविधता
5) वर्गीय विविधता
6) भाषिय विविधता
7) सांस्कृतिक विविधता

M T W T F S

Date: 17/ 01/ 22 Page No.

विविधता मे एकता का स्वरूप

प्रदेश, भाषा, धर्म, जाती आदि के संबंध मे भारत मे अनेक प्रकार की विभिन्नता है, परंन्तु इन सभी विभिन्नता के उपरांत भी एकसंघता पायी जाती है, जिसके कारण राष्ट्र का निर्माण एवंम पुनर्निर्माण करने मे सहायता मिलती है।

भारत मे विविधता मे एकता का जो स्वरूप दिखाई देता है, वह निम्न मुद्दो या कारको के कारण है। यही यहाँ के विविधता मे एकता का स्वरूप प्रकट करता है।

1) भौगोलिक एकता
2) वांशिक एकता
3) धार्मिक एकता
4) जाती-पाती मे एकता
5) भाषाई एकता
6) राजनीतिक एकता
7) सांस्कृतिक एकता

राष्ट्रीय एकात्मता के मार्ग की बाधाएँ

1) सम्प्रदायवाद / साम्प्रदायिकता
2) जातीवाद
3) प्रादेशिकतावाद / क्षेत्रवाद
4) आतंकवाद
5) असमानता
6) भाषावाद
7) दलीय राजनीती और सत्ता स्पर्धा
8) राजनैतिकता

SHREE

M T W T F S

Date: 17/2/19 Page No. —

राष्ट्रिय एकात्मता को बढाने हेतू किए गए उपाय ★

1) स्वतंत्रता आंदोलन के समय सभी भारतीयो के मन मे राष्ट्रीय एकात्मता की भावना जाग उठी थी। तथापि स्वतंत्रता प्राप्ती के समय यह भावना विखंडित हो गई तथा भारत का विभाजन होकर भारत और पाकिस्तान इन दो राष्ट्रो का उदय हुआ। इसलिए हमारे संविधान निर्माताओ ने राष्ट्रीय एकात्मता को महत्त्व दिया और राष्ट्रीय एकात्मता को गतिशील बनाने के लिए संविधान मे विभिन्न प्रावधान किए है। सरकार ने भी उसके लिए कुछ अंतिम प्रावधान किए है।
वे प्रावधान इसप्रकार है।

1) संविधानिक प्रावधान
2) मूलभूत अधिकार
3) संघराज्य पध्दति
4) मार्गदर्शक तत्व
5) भाषिय सामंजस्य
6) आर्थिक तथा सामाजिक समानता

2) शैक्षिक उपक्रम ★ शिक्षा यह राष्ट्रीय एकात्मता बढाने का प्रभावी साधन है।
1) राष्ट्रीय एकात्मता को पोषक पाठ्यक्रम तैयार किया जाना चाहिए।
2) भारत का इतिहास, सभी धर्मो के मौलिक तत्व, प्रक्षेत्रीय स्थल, भारत के महान हस्तियो की पहचान आदि बातो पर बल देना चाहिए।
3) छात्रो के मन पर सत्य, अहिंसा, राष्ट्रप्रेम, स्वतंत्रता, समानता, बंधुओ आदि मूल्यो का प्रभाव डालना चाहिए।
4) छात्रो मे वैज्ञानिक वृत्ति निर्माण करनी चाहिए।
5) छात्रो के पूर्वाग्रह, अंधविश्वास तथा सामाजिक भेदभाव की वृत्ति को समाप्त कर उनमे सामंजस्य निर्माण करना चाहिए।
6) छात्रो के मन मे अपने समान सामाजिक - सांस्कृतिक विरासत के प्रति अभिमान निर्माण किया जाना चाहिए।

SEAL

SHREE

राष्ट्रीय एकात्मता के लिए अपनाये जानेवाले उपाय →

स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद राष्ट्रीय एकात्मता का संवर्धन करने के लिए केन्द्र तथा राज्य सरकार ने समय-समय पर अनेक उपाय किए है। इसके लिए और भी प्रयास करने की आवश्यकता है।

1) राष्ट्रीय भावना का विकास
2) प्रभावी शैक्षिक नीती
3) पारदर्शी प्रशासन
4) भ्रष्टाचार पर नियंत्रण
5) प्रसार माध्यमो पर उपयोग
6) अ) मुद्रित माध्यम ब) इलैक्ट्रॉनिक माध्यम
6) धार्मिक सामंजस्य (सुसंवाद)
7) युवाओ के लिए समान मंच / व्यासपीठ
8) केन्द्र - राज्य संबंधो मे सुधार
9) सभी प्रदेशो के लिए विकास कार्यक्रम
10) राष्ट्रीय त्योहार तथा समारोहो का आयोजन

भारत मे सामाजिक परिवर्तन

राष्ट्रिय एकात्मता का अर्थ उसके मार्ग की बाधाएं और उस पर उपाय आदि का अध्ययन किया है। साथ ही विविधता मे एकता कैसी है, का भी अध्ययन किया है। इस अध्याय मे हम भारत मे सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन करनेवाले है। " सामाजिक परिवर्तन " समाज-शास्त्र की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। किसी भी समाज का स्वरूप समझने या ज्ञात करने हेतू उसकी रचना तथा उस रचना मे होनेवाले परिवर्तनो का अध्ययन करना आवश्यक है। इस अध्याय मे हम अध्ययन करनेवाले है औद्योगीकीकरण, नगरीयकरण, पाश्चिमीकरण, आधुनिकिकरण और, लोकतंत्रीकरण अर्थात जनतंत्रीकरण आदि प्रक्रियाओ द्वारा भारतीय समाज मे होनेवाले परिवर्तन का अध्ययन करनेवाले है।

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया ठिक से समझने के लिए हमे इस अवधारणा का अर्थ ज्ञात करने का प्रयास करेंगे।

SEAL

M T W T F S

Date: 17/2/22 Page No.

सामाजशास्त्र मे सामाजिक परिवर्तन इस संज्ञा को एक निश्चित अर्थ है। समाज मे होनेवाले प्रत्येक परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन नही कहा जा सकता। मूलत: सामाजिक संरचना मे होनेवाले परिवर्तन को लेकर ही "सामाजिक परिवर्तन" इस संज्ञा का प्रयोग किया जाता है। सामाजिक परिवर्तन का अर्थ समझने के लिए प्रसिध्द समाजशास्त्रीयो द्वारा दी गई सामाजिक परिवर्तन की परिभाषा को देखेंगे।

१) "मूलभूत अर्थ से समाज संरचना मे परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन है।"
२) "केवल सामाजिक संगठन मे अर्थात, सामाजिक संरचना तथा कार्य मे होनेवाले परिवर्तन को ही सामाजिक परिवर्तन कहा जा सकता है।
३) "सामाजिक संरचना और सामाजिक संबंधो मे होनेवाले परिवर्तन को ही सामाजिक परिवर्तन कहते है।

औद्योगिकीकरण {INDUSTRIALIZATION}

औद्योगिकीकरण यह एक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया है। औद्योगिकिकरण क्रांती के कारण/प्रभाव के कारण इंग्लैंड मे इस प्रक्रिया की शुरुवात हुई। १८ वी और १९ वी सदी मे वैज्ञानिक तथा तकनिकी विकास हुआ। विभिन्न यंत्र तथा तंत्र अस्तित्व मे आए। उत्पादन प्रक्रिया मे उनका उपयोग किया जाने लगा। परिणाम: विशाल उद्योगो का निर्माण हुआ। इस उत्पादन पध्दति मे आमूलचूल परिवर्तन को औद्योगिक क्रांती कहा गया है।

औद्योगिकरण क्रांती के प्रभाव-स्वरूप प्रारंभ मे युरोपियन देशो मे तथा बाद मे विश्व के अन्य देशो मे बडे-बडे उद्योगो का निर्माण हुआ। इस प्रकार विशाल उद्योग-व्यवसाय मे वृध्दी तथा विस्तार की इस प्रक्रिया को ही औद्योगिकरण कहा गया है।

SEAL

SHREE

M T W T F S

Date: / / Page No.

औद्योगिकरण की परिभाषा

१) "वस्तु उत्पादन, यातायात और संचार के लिए भाँप/वाष्प और विद्युत आदि जैसे अजैविक शक्ति साधनो का प्रयोग करना ही औद्योगिकरण कहलाता है।"

२) "आर्थिक वस्तुओ तथा सेवाओं के उत्पादन हेतू अमानवीय तथा अजैविक शक्ति का बड़े पैमाने पर प्रयोग करना यही औद्योगिकरण का मूलभूत अर्थ है।"

३) "औद्योगिकरण यह व्यावहारिक विज्ञान के प्रयोग के द्वारा तकनीकी विकास को साकार करनेवाली प्रक्रिया है। विद्युत चलित यंत्रो द्वारा विशाल मात्रा मे उत्पादन होना, उत्पादक तथा उपभोक्ता के लिए वस्तुओ का विस्तृत बाजार केन्द्र उपलब्ध होना, श्रमविभाजन द्वारा कार्य का विशेषीकरण होना तथा इन सभी बातो के लिए नगरीयकरण द्वारा गति मिलना यह इस प्रक्रिया की विशेषताएँ है।

औद्योगिकरण का अर्थ

१) वैज्ञानिक ज्ञान पर निर्भर यंत्र तथा तंत्र का प्रयोग करके वस्तुओ तथा सेवाओ का उत्पादन करने की प्रक्रिया का तात्पर्य ही औद्योगिकरण है।

२) मानवीय अथवा जैविक शक्ति के अतिरिक्त अमानवीय अथवा अजैविक शक्ति पर चलनेवाले यंत्र तथा साधनो का प्रयोग करना ही औद्योगिकरण है।

३) उत्पादन पध्दती, फसल बुआई की पध्दती, यातायात तथा संचार पध्दती का यांत्रिकिकरण होना औद्योगिकिकरण है।

SEAL SHREE

M T W T F S

Date: / / Page No.

औद्योगिकीकरण की विशेषताएँ ★★

१) उत्पादन व्यवस्था का यांत्रिकीकरण
२) कारखाना पध्दती
३) श्रमविभाजन और विशेषीकरण
४) यातायात तथा संचार साधनो का विकास
५) पूँजी को प्राथमिकता
६) लाभ-प्राप्ती के लिए उत्पादन
७) नगरीयकरण को प्रेरना / संवर्धन
८) कृषि उत्पादन तकनीकी मे परिवर्तन
९) सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया

औद्योगिकीकरण का भारतीय समाज पर प्रभाव

हमने औद्योगिकरण का अर्थ तथा विशेषताओ का अध्ययन किया है। अब हम औद्योगिकीकरण के कारण भारतीय समाज मे घटित हुए सामाजिक परिवर्तनो के स्वरुप का अध्ययन करेंगे।

ब्रिटिश-काल मे भारत मे औद्योगिकरण का प्रारंभ हुआ।

वस्त्र, रसायन, औषधी, खाद, लोह, आदि विभिन्न क्षेत्रो मे बडे-बडे उद्योगो का निर्माण हुआ। सन १९४७ मे भारत स्वतंत्र हुआ। उसके बाद भारत-सरकार ने औद्योगिकरण विकास पर विशेष लक्ष केंद्रित किया। परिणामत: स्थानीय उद्योगो मे तेजी से वृध्दी होने मे सहायता मिली है। औद्योगिक नक्शे पर भारत को लाने के लिए सरकार ने विशाल मात्रा मे पूंजी-निवेश की मांग करनेवाले भारी उद्योगो के क्षेत्र मे प्रवेश करना तय किया। संकुचित उत्पादन वृध्दी को प्रोत्साहन तथा सहायता उद्योगो का शीघ्र विकास करने हेतू सरकार ने अनेक भारी उद्योग संपूर्ण भारत मे स्थापित किए। इस प्रकार औद्योगिकिकरण के प्रभाव के कारण भारतीय समाज मे सामाजिक परिवर्तन हुआ।

SEAL

PRINCIPAL
Yashoda Girls Arts & Commerce College
Sitabuldi Nagar, Nagpur-12

SHREE